01 / 04 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

निरन्तर साथी, त्यागी व वरदानीमूर्त होने का अनुभव

➢➢ बापदादा द्वारा दिये गए स्वमान

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा शूरवीर हूँ

→ मैं आत्मा सदा ताजधारी व तख्तधारी हूँ

■ मैं आत्मा हर सेकेण्ड हर संकल्प में

■ श्रेष्ठ त्याग कर

■ श्रेष्ठ भाग्य बनाती हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा माया जीत हूँ

→ मैं आत्मा विजयी रत्न हूँ

■ मैं आत्मा फेथफुल हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा बाप के कदमों पर कदम रखने वाली

→ सदा की सहयोगी और साथी आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा हर समय बाप की याद और सेवा में मगन रहने वाली

→ सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी

■ बाहर न निकलने वाली मर्यादा पुरूषोत्तम आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा हर सेकेण्ड हर संकल्प में

→ बापदादा के साथ रहने वाली

■ पद्मा पदम् भाग्यवान आत्मा हूँ

→ मुझ आत्मा का कितना श्रेष्ठ भाग्य है

■ स्वयं भगवान ने मुझ आत्मा को घर बैठे ही चुन लिया

■ इतनी लाखों-करोड़ों आत्माओं में से

■ उसकी नजर मुझ आत्मा के ऊपर पड़ी

■ उसने मुझे अपना बना लिया

■ वाह! मेरा श्रेष्ठ भाग्य वाह!

➢➢ निरन्तर साथी होने का अनुभव

➳ _ ➳ इस संगम पर ही मैं आत्मा

➳ _ ➳ बाबा से किया हुआ अपना हर वायदा निभाती हूँ

→ तुम्हीं से बैठूँ

→ तुम्हीं से हर सेकेण्ड

→ हर कर्म में साथ निभाऊं

■ बाबा ने मुझ सपूत बच्चे को जन्म-जन्मान्तर

■ साथी भवः का वरदान अभी इस संगम पर दिया हैं

➳ _ ➳ मैं आत्मा हर पार्ट में हर वर्ण में

➳ _ ➳ बापदादा के साथ-साथ पार्ट बजा रही हूँ

→ मैं आत्मा साकार बाप के साथ भिन्न नाम रूप से

→ पूज्य में भी साथी हूँ

→ पुजारीपन में भी साथी हूँ

→ ज्ञानी तू आत्मा बनने में भी साथी हूँ

→ और भक्त आत्मा बनने में भी साथी हूँ

→ विकर्माजीत बनने में भी साथी हूँ

→ राजा विक्रम (विक्रमादित्य) बनने के समय भी साथी हूँ

- ऐसे सदा साथी का वा तत्वम् का वरदान
- मुझ विशेष आत्मा को अभी इस संगमयुग में ही प्राप्त हुआ है

➳ _ ➳ इसका ही गायन है

→ साथ जियेंगे

→ साथ मरेंगे

→ साथ चढ़ेंगे

→ साथ गिरेंगे

- चढ़ती कला और उतरती कला
- दिन और रात
- दोनों में निरन्तर योगी, निरन्तर साथी हूँ

➳ _ ➳ अभी संगम पर साथ निभाने में

➳ _ ➳ मैं आत्मा सम्पूर्ण बन रही हूँ

→ इसलिए मैं बहुत वैल्यूएबल आत्मा हूँ

- बाबा को पाकर तो मुझ आत्मा का जीवन धन्य धन्य हो गया है

➢➢ मैं आत्मा सर्वस्व त्यागी हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा मैं-पन का त्याग करने वाली श्रेष्ठ आत्मा है

→ यह सबसे बड़े से बड़ा और

→ अति सूक्ष्म त्याग मुझ आत्मा ने किया है

- इसी त्याग के आधार पर
- मुझ आत्मा ने नम्बरवन लेने का भाग्य बनाया है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को तो अब हर सेकेण्ड, हर संकल्प में

➳ _ ➳ बाबा-बाबा ही याद रहता है

→ मेरा स्वभाव

→ मेरा संस्कार

→ मेरी नेचर

→ मेरा काम

→ मेरी ड्यूटी

→ मेरा नाम

→ मेरी शान

- यह सब मेरा-मेरा
- मैं-पन और मेरा-पन को
- मुझ आत्मा ने सम्पूर्ण रीति से समाप्त कर दिया है

➳ _ ➳ अब तो मुझ आत्मा को स्वप्न में भी मैं-पन नही आता है

→ अश्वमेध यज्ञ में मैंपन के अश्व को मुझ आत्मा ने स्वाहा कर दिया है

- अब यह अंतिम आहुति मुझ आत्मा ने दे दी है

➢➢ मैं आत्मा वरदानी मूर्त हूँ

➳ _ ➳ बाबा से शक्तिशाली किरणे लेकर मैं आत्मा

→ विश्व के कोने कोने में प्रवाहित कर रही हूँ

→ जन जन तक परमात्म सन्देश पहुँच रहा है

→ चारों तरफ प्रत्यक्षता की आवाज़ गूँज उठी है

- हर तरफ विजय का झण्डा लहरा रहा है

→ संगठन रूप में इस अन्तिम आहुति का आवाज़ चारो और फैल रहा है

- यह पांचों तत्व सदा सब प्रकार की
- सफलताओं की माला पहना रहे है

➳ _ ➳ अब तक तो तत्व भी सेवा में कहीं-कहीं विघ्न रूप बनते हैं

→ लेकिन स्वाहा की आहुति देने से फिर यह तत्व भी आरती उतार रहे है

■ खुशी के बाजे बज रहे है

➳ _ ➳ सब आत्मायें अपनी बहुत काल की इच्छाओं की

➳ _ ➳ प्राप्ति करते हुए महिमा के घुंघरू पहन नाच रही है

→ अब अन्तिम भक्ति के संस्कार मर्ज हों रहे है

→ भक्त आत्माओं को भक्त-पन का वरदान

■ अभी मैं इष्टदेव आत्मा दे रही हूँ

➳ _ ➳ कोई को भक्त तू आत्मा का वरदान दे

→ कोई को आत्मज्ञानी भव का वरदान

■ साकारी राज्य करने वालों को राज्यपद का वरदान दे रही हूँ

➳ _ ➳ मैं वरदानी मूर्त आत्मा सर्व आत्माओं को यह वरदान दे रही हूँ

→ मैं वरदानीमूर्त्त कामधेनु आत्मा हूँ

■ जो आत्मा जो भी कामना से आय, जो भी मांगे

■ मेरे तथास्तु कहते ही उनकी हर मनोकामनाएं पूर्ण हो रही है